इन्क़िलाबी नज़र

आवाज़ ... आम आदमी की

लखनऊ, शुक्रवार, 13 फरवरी 2026

चाहे वो गूगल हो या एप्पल या फ्री सॉफ्टवेयर, हमारे कुछ शानदार प्रतिस्पर्धी है जो हमें चौकन्ना रखते है।

- बिल गेट्स

वर्ष 18 अंक 163 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12

तापमान - अधिकतम 27.0°C (+1.5) न्यूनतम 12.1°C(+1.8) सेंसेक्स 83,674.92 (-558.72) निफ्टी 25,807.20 (-146.65) सोना 1,58,550 चांदी 2,95,000 मुद्रा - डालर 90.55 दिरहम 24.65 रियाल 24.14

बीमारियों के इलाज से अधिक जरूरी है उसकी रोकथाम : प्रो. अब्बास अली

बच्चे की सुस्ती और कमजोरी के पीछे सीसा भी हो सकता है बड़ा कारक : डॉ. गिरधर ज्ञानी

एरा विवि में दो दिवसीय लेडकॉन-2026 का समापन

लखनऊ (ब्यूरो)। लेड (सीसा) से होने वाले दुष्प्रभाव और बीमारियों से बचाव के लिए चिकित्सकों के एमबीबीएस, एमडी और न्यूरोलॉजी के पाठ्यक्रम में इसे शामिल किया जाना चाहिए। हमने इस संबंध में प्रस्ताव दिया है। चिकित्सकों को इस बारे में पता होना चाहिए कि बच्चे की सुस्ती, उसकी कमजोरी आदि के पीछे एक कारक लेड भी हो सकता है। यह बात एसोसिएशन ऑफ हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स के महानिदेशक डॉ. गिरधर ज्ञानी ने एरा विवि के बायोटेक्नोलॉजी विभाग की ओर से तथा इंडियन सोसाइटी फॉर लेड अवेयरनेस एण्ड रिसर्च (इंसलार) के सहयोग से आयोजित दो दिवसीय लेडकॉन-2026 कांफ्रेंस को सम्बोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि बेंगलुरु के सेंट जॉंस मेडिकल कॉलेज के बच्चों में लेड के शोध के बाद हमने कई पेंट कम्पनियों के नमूने लेकर जांच कराई, जिसमें कई बड़ी कंपनियों के पेंट में लेड था। कंपनियों से धमकियां मिलने के बाद हमने संवाद का रास्ता अपनाया और मंदिरों में बात की, जिसका असर हुआ और बिना रंगों की मूर्तियां आना शुरू हुईं। उन्होंने कहा कि बैटरी, पेंट आदि प्लाण्ट के आस-पास रहने वाले हाई रिस्क ग्रुप की स्क्रीनिंग होना चाहिए। उन्होंने लेड की जांच के लिए के देश भर में मात्र 60 लैब पर चिंता जताई। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से अपने क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया के वर्ष 2003 से 12 के बीच महासचिव रहते हुए मुलाकात का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि डॉ. कलाम क्वालिटी के प्रति बहुत जुनूनी थे। डॉ. ज्ञानी ने कहा कि हमने 2047 तक यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज का लक्ष्य रखा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 1000 लोगों पर अस्पतालों में 3 बेड होने चाहिए जबकि स्थिति काफी विपरीत है। यूपी में मात्र 1.4, बिहार में 0.3 है, जबकि केरल में 3 और कर्नाटक में 4.2 है। बेड बढ़ाने के लिए निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन देने का सुझाव दिया है। उन्होंने बताया कि पीले रंग में लेड सबसे अधिक होता है। पर्यावरण मंत्रालय से पेंट में लेड कंटेंट को लेकर अधिसूचना जारी कराई गयी है। उन्होंने एरा विवि के कुलपति प्रो. अब्बास अली मेहदी को चिकित्सा के प्रति जुनूनी बताया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए एरा विवि के कुलपति प्रो. अब्बास अली मेहदी ने कहा कि हमें समस्या का कारण ढूंढना होगा। जिस तरह बीमारियों के लिए अस्पताल है लेकिन बीमारी होने का कारण क्या है। उन्होंने चिकित्सकों और वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि युवाओं का भविष्य आपके कंधों पर है। बीमारियों से बचाव बुनियादी मकसद है। इलाज जरूरी है लेकिन उसकी रोकथाम कहीं जरूरी है।

इससे पूर्व के सत्र में सरफेक्टेंट्स एण्ड एलाइड केमिकल के उपाध्यक्ष डॉ. नरसिंहा राव ने दूषित सतहों पर सीसे का पता लगाने और इसे हटाने के लिए व्यावहारिक समाधानों पर चर्चा की। सीएसआईआर-आईआईटीआर के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. कौसर एम. अंसारी ने भारत में माताओं के दूध में कई माइकोटॉक्सिन और भारी धातुओं की निगरानी पर शोध पेश किया। ईश्वरी ग्लोबल मेटल इंडस्ट्रीज के प्रबंध निदेशक डॉ. सबरीनाथन अनबलगन ने पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों, उचित अपशिष्ट और उत्सर्जन प्रबंधन पर बल देते हुए बैटरी रीसाइक्लिंग उद्योग में अच्छी प्रथाओं पर बात की। दूसरे सत्र में निदेशक और डीन कॉलेज ऑफ फार्मेसी एरा विवि प्रो. एस.जे.एस. फ्लोरा ने लेड की विषाक्तता में औषधीय हस्तक्षेपों, एंटीऑक्सीडेंट आधारित सहायक उपचारों और विकसित उपचार प्रोटोकॉल में प्रगति पर चर्चा की। इंडिया हेल्थ एक्शन ट्रस्ट के डॉ. दिवास कुमार ने देश के 10 शहरों में स्कूली बच्चों के खून में लेड स्तर का आंकलन शीर्षक से अध्ययन पेश करते हुए निष्कर्ष बताया और राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों और निवारक सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेपों की तत्काल जरूरत पर रोशनी डाली। इस दौरान पोस्टर प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया, जिसमें कुनूत रिजवी को प्रथम, अदीबा जावेद और कुदसिया फातिमा को द्वितीय और तृतीय पुरस्कार इंसिया रिजवी और इंशरा आब्दी तथा करुणा शंकर राठौर के संयुक्त रूप से दिया गया। इस मौके पर डॉ. सुधीर मेहरोत्रा और डॉ. गिरधर ज्ञानी को एरा फैकल्टी ऑफ मेडिसिन के डीन डॉ. एम.एम.ए. फरीदी ने, एरा विवि के कुलपति प्रो. अब्बास अली मेहदी और डॉ. टी. वेंकटेश ने डॉ. एम.एम.ए. फरीदी को पौधा भेंट किया। डॉ. तबरेज जाफर ने समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए अतिथियों का आभार और डॉ. कलीम अहमद ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कांफ्रेंस में 220 से अधिक वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, विष विज्ञानियों, शिक्षाविद, पर्यावरणविद, शोधकर्ता और छात्रों ने हिस्सा लिया।